मोदी राज आया नहीं: दंगाई पैंतरा दिखाने लगे

मनोज कुमार झा

संघ समझ रहा है कि बाज़ी उसके हाथ में है और मोदी को प्रधानमंत्री बनने से कोई ताकत रोक नहीं सकती, वहीं अपनी हार के प्रति आश्वस्त कांग्रेस इस बात की पूरी कोशिश करेगी कि तथाकथित थर्ड फ्रंट में शामिल दलों को अगर कामचलाऊ वोट मिल जाते हैं तो उन्हें समर्थन देकर उनकी ही सरकार बनवाए। ममता, जयललिता, और मायावती जैसों का कोई ठिकाना नहीं। ये सत्ता में भागीदारी के लिये किसी से भी हाथ मिला सकती हैं और किसी भी हद तक जा सकतीं हैं। कोई जोगी को पकड़ता है तो कोई भोगी को और सत्ता के लिये कोढ़ी के साथ भी शयन करना पड़े तो इनकार नहीं। यह जानता ही है जो इन्हें ढो रही है।

कुल मिलाकर, इस चुनाव ने यह दिखा दिया है कि भारतीय लोकतंत्र में जो सड़ांघ अब तक भरती रही है, हालत ऐसी हो गई कि अब वह बजबजाकर फूट कर बाहर फैल रही है। सभी दलों और नेताओं के कालिख पुते चेहरे लोग़ों के सामने हैं। यानी जनता को अब किसी तरह के भ्रम में रहने की जरुरत नहीं है। भाजपा या किसी भी दल के लिए भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाने का कोई औचित्य नहीं, क्योंकि जनता जानती है कि सभी दलों में एक से बढ़ कर एक भ्रष्टाचारी धुरंधर भरे पड़े हैं। मौका मिलते ही देश बेचने को तैयार। मोदी-अमितशाह दंगाई है। दंगाई से सभी डरते हैं। अभी मोदी राज नहीं आया, पर दंगाई खुले में घूमने लगे। पैंतरा दिखाने लगे।

इस बार हो रहा आम चुनाव इस रूप में असाधरण है कि इसमें सभी दलों के सत्ताकांक्षी नेता मुखौटे उतारने के साथ-साथ मुखौटे लगा-लगा कर सामने आ रहे हैं। सभी एक-दूसरे से गठबंधन कर सत्ता में भागीदारी के लिए होड़ कर रहे हैं।

कांग्रेस का मतलब अब राहुल गांधी है और भारतीय जनता पार्टी नरेन्द्र मोदी के नाम से जानी जा रही है। मोदी के आगे बीजेपी में सबकी बोलती बंद है। 'युगपुरुष' आडवाणी दरकिनार कर दिए गए। इन्हें राष्ट्रपति पद का झुनझुना थमाया गया है। दूसरी तरफ, भारतीय आम चुनावों के इतिहास में प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार की (घोषित और अघोषित) इतनी भद्द नहीं पिटी थी, जितनी इस बार पिट रही है। इससे प्रधानमंत्री पद की मर्यादा ही खत्म हो गई है। एक तरफ, भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी को क़ातिल खूनी और हत्यारा बताया जा रहा है। मुख्य प्रतिद्वंद्वी दल के सांसद पद के एक उम्मीदवार द्वारा मोदी को टुकड़े-टुकड़े करने की बात की जा रही है, वहीं कांग्रेस के 'युवराज' राहुल गांधी को 'पप्पू' कह कर मजाक उड़ाया जा रहा है। माहौल ऐसा है कि अमित शाह जैसा मोदी का सहयोगी दंगारोपी खुलेआम सांप्रदायिक भावनाओं को भड़काने की कोशिश करता है और उस पर पुलिस में मामला दर्ज होता है। वहीं, वेबसाइट कोबरा पोस्ट डॉट कॉम के स्टिंग ऑपरेशन से यह खुलासा सामने आता है कि बाबरी मस्जिद के ध्वंस के लिए संघ और भाजपा के तमाम बड़े नेताओं की जानकारी में डाइनामाइट ले जाया गया था। खास बात यह भी है कि मतदान प्रक्रिया शुरू होने के बाद जारी किए गए घोषणापत्र में राममंदिर के निर्माण की बात कही गई है, साथ में यह भी कि मोदी ऐसा नहीं चाहते थे। ऐसा इसलिए कि बीजेपी के साथ एनडीए में दूसरे दलों के जुड़ने में धर्मसंकट न महसूस हो। कौन नहीं जानता कि अयोध्या में मंदिर निर्माण के मुद्दे ने ही बीजेपी के पक्ष में वोटों का ध्रुवीकरण किया था और बीजेपी मंदिर निर्माण कराये या नहीं, इस मुद्दे को उभार कर हमेशा वोटों में भुनाना चाहेगी।

ऐसे अवसरवादी क्षेत्रीय दलों की कोई कमी नहीं जो मौका देखकर भाजपा के पाले में आने को तैयार न हों। इनमें ममता से लेकर जयललिता और माननीया बहन जी भी हो सकती हैं। इधर मीडिया भोंपू बजा-बजा कर कह रहा है कि भाजपा अपने दम पर बहुमत हासिल कर लेगी और प्रधानमंत्री बनने के लिये मोदी को किसी के समर्थन की दरकार नहीं है। मोदी प्रधानमंत्री बनते हैं या नहीं, यह फ़ैसला बहुत जल्दी सामने आने वाला है, लेकिन मीडिया ने मानो अभी से ही उनकी ताजपोशी कर दी है। तमाम मीडिया सर्वे मामले इसी उम्मीदवार को सिफ़ारिश पर मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने करके दिये हैं। और प्री पोल में मोदी को सबसे आगे दिखाया जा रहा है। ऐसा लगता है कि सभी प्रमुख मीडिया घराने मोदी के प्रचार के मंच बन गए हैं। ऐसा हो भी क्यों नहीं! आख़िर, भारतीय मीडिया पर मुकेश अंबानी का वित्तीय प्रभुत्व जो स्थापित हो चुका है।

मीडिया 'स्वतंत्र और निष्पक्ष' क्या यह एक मिथ नहीं है? मीडिया माहौल बनाता है। वह मोदीमय हो चुका है। वहीं, सोशल साइट्स पर जहां मोदी के खरीदे हुए समर्थक आक्रामक प्रचार अभियान चला रहे हैं, उनका विरोध भी जबरदस्त तरीके से हो रहा है। एक बात साफ़ है- विकल्पहीनता की स्थिति में संघ परिवार के लिए यह बड़ा ही उपयुक्त अवसर सामने आ गया है। कांग्रेस के कुशासन और भयंकर भ्रष्टाचार के कारण और किसी भी नये विकल्प के अभाव में हताश वोटरों के सामने कोई चारा नहीं रह गया है। आम आदमी पार्टी के उभार के साथ ऐसा लग तहा था कि जनता के सामने एक नया विकल्प आया है जो राजनीति में शुचिता और नैतिक मूल्यों की बात को सामने रखते हुए कुछ नई संभावनाओं के द्वार खोलेगा, पर सांगठनिक कमजोरी और स्पष्ट वैचारिक दिशा के अभाव के कारण मुख्य धारा राजनीति में इसके लिये कोई बड़ा हस्तक्षेप कर पाना संभव नहीं लगता। अरविंद केजरीवाल की ईमानदारी शक से परे हो सकती है, पर चुनावों में जहां धन बल और पाशविक लाठी बल सबसे ज़्यादा कारगर होते हैं, केजरीवाल की 'शिवजी की बरात' बनी 'आप' किस हद तक अपनी जीत दर्ज करा पाएगी, यह संदिग्ध है। शासक दलों के रूप में दशकों से स्थापित कांग्रेस-भाजपा एवं चुनावी राजनीति की हर तिकड़म में सिद्धहस्त संगठनों के चक्रव्यूह को भेद पाना आम आदमी पार्टी के लिये संभव प्रतीत नहीं होता।

ऐसी स्थिति में यह चुनावी युद्ध मुख्य रूप से उन्हीं दलों के बीच हो रहा है जिनका चरित्र, चाल और चेहरा एक है। अलग-अलग होने के बावजूद इस मामले में ये एक हैं कि इनका उद्देश्य येन-केन प्रकारेन सत्ता पर काबिज़ होना है और जनता से उनका कोई जुड़ाव नहीं है। इस मामले में कांग्रेस,भाजपा, समाजवादी पार्टी, जनता दल यूनाइटेड, तृणमूल कांग्रेस, बसपा, वामपंथी और अन्य छोटे-बड़े दल एक हैं। अगर भाजपा सांप्रदायिक है तो कांग्रेस भी जरा कम नहीं और न ही सपा, न जदयू, न ही लेफ्ट। कोई हिंदू वोटों के ध्रुवीकरण में लगा है तो कोई मुस्लिम वोटों के। क्या गजब है कि सोनिया को जामा मस्जिद के इमाम से मिलना पड़ा और उनसे यह अपील करवानी पड़ी कि मुसलमान कांग्रेस को वोट दें। राहुल को मसूद का प्रचार करना पड़ा जिसने कहा कि मोदी के हजार टुकड़े कर देगा। वहीं, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में दंगों के मास्टर माइंड अमित शाह ने खुलेआम लोग़ों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काया । इस तरह, कुल मिलाकर सभी दल 'भयादोहन' की राजनीति कर रहे हैं। हिंदुओं को मुसलमानों के खिलाफ़ भड़काओ, मुसलमानों को डराओ और फ़िर दोनों से वोट लो। ये है इस चुनावी राजनीति का लब्बोलुवाबा।

खास बात यह है कि इस बार संघ ने पूरी तरह से भाजपा के चुनावी प्रचार अभियान को अपने हाथ में ले लिया है। उसने आक्रामक प्रचार अभियान शुरू किया है। व्यापक स्तर पर घृणा फैलाई जा रही है, उन्माद पैदा करने की कोशिश की जा रही है। मंचों से मोदी जब चीखता है तो उसकी आवाज़ खैफ़नाक लगती है। ऐसा लगता है, उसे जनता की जरा भी परवाह नहीं। वह जनहित के किसी मुद्दे को नहीं उठाता, वह लोग़ों को संबोधित नहीं करता, वह उस कांग्रेस पर ताबड़तोड़ प्रहार करता है, जिसकी हार सुनिश्चित है। वह एक तमाशाई की तरह मजमा लगाता है, पर क्या सारे तमाशबीन वोटर होते हैं? सारे तमाशबीन वोटर भले न हों, पर भीड़ जितनी बढ़ती है, माहौल उतना ही बनता है। संघ ने चुन-चुनकर सिद्धहस्त दंगाइयों को मैदान में खुला छोड़ दिया है। ये दंगाई जिन्हें कोर्ट से 'क्लीन चिट' मिली हुई है, जमकर उन्माद फैला रहे हैं। सांप्रदायिक राजनीति को अपना चेहरा छुपाने के लिए अब किसी नकाब अथवा मुखौटे की जरूरत नहीं रह गई है। भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिकता का कई बार नंगा नाच हो चुका है। पूरी भारतीय राजनीति ही हिंदू-मुसलमान केंद्रित रही है, पर इस बार साम्प्रदायिक तत्व जिस तरह खुलकर मैदान में आ गए है और जैसे-जैसे दांव वो आज़मा रहे हैं, इसके परिणाम बड़े भयावह होंगे। साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण तेज होगा। संघ हिंदू साम्प्रदायिकता को भड़का रहा है तो अल्पसंख्यक साम्प्रदायिकता को भी भड़कने से नहीं रोका जा सकता। कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, जनता दल, वामपंथी अल्पसंख्यक साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण में जरा भी पीछे नहीं रहेंगे और देश में दंगे भड़केंगे।

संघ समझ रहा है कि बाज़ी उसके हाथ में है और मोदी को प्रधानमंत्री बनने से कोई ताकत रोक नहीं सकती, वहीं अपनी हार के प्रति आश्वस्त कांग्रेस इस बात की पूरी कोशिश करेगी कि तथाकथित थर्ड फ्रंट में शामिल दलों को अगर कामचलाऊ वोट मिल जाते हैं तो उन्हें समर्थन देकर उनकी ही सरकार बनवाए। ममता, जयललिता, और मायावती जैसों का कोई ठिकाना नहीं। ये सत्ता में भागीदारी के लिये किसी से भी हाथ मिला सकती हैं और किसी भी हद तक जा सकतीं हैं। कोई जोगी को पकड़ता है तो कोई भोगी को और सत्ता के लिये कोढ़ी के साथ भी शयन करना पड़े तो इनकार नहीं। यह जानता ही है जो इन्हें ढो रही है।

कुल मिलाकर, इस चुनाव ने यह दिखा दिया है कि भारतीय लोकतंत्र में जो सड़ांघ अब तक भरती रही है, हालत ऐसी हो गई कि अब वह बजबजाकर फूट कर बाहर फैल रही है। सभी दलों और नेताओं के कालिख पुते चेहरे लोग़ों के सामने हैं। यानी जनता को अब किसी तरह के भ्रम में रहने की जरूरत नहीं है। भाजपा या किसी भी दल के लिए भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाने का कोई औचित्य नहीं, क्योंकि जनता जानती है कि सभी दलों में एक से बढ़ कर एक भ्रष्टाचारी धुरंधर भरे पड़े हैं। मौका मिलते ही देश बेचने को तैयार। मोदी-अमितशाह दंगाई है। दंगाई से सभी डरते हैं। अभी मोदी राज नहीं आया, पर दंगाई खुले में घूमने लगे। पैंतरा दिखाने लगे।

तुर्की-ब-तुर्की

"सोनिया के जमाई राजा (राबर्ट वाड्रा) तमाम फ़र्जीवाड़े कर चुके हैं। चुनाव के बाद हमारी सरकार बनने के बाद पक्का जान लीजिये कि जमाई बाबू को जेल भिजवायेंगे"

हमारा कहना है :

- **आप राजनीतिकों की याद्दाश्त पर मतदाता भरोसा करे तो कैसे? चुनाव जीतने के बाद कहीं ऊमा-सोनिया बहन-बहन न हो जायं। क्योंकि ज़्यादा उम्मीद यही है कि सोनिया के जमाई राजा का बाल भी बाका शायद ही हो।**
- **आप जैसे लोग और आपकी पार्टी 6 वर्ष केन्द्र सरकार पर काबिज़ रही पर सोनिया के पति राजीव गांधी का बोफ़ोर्स घोटाला एक कदम भी आगे नहीं चला। आज भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी सार्वजनिक मंचों से भ्रष्टाचार का ककहरा गिनाने में बी फ़ॅर बोफ़ोर्स घोटाला कहना नहीं भूलते। हालांकि वे भी यह नहीं बता पाते कि स्वयं भाजपाई सरकार ने कोई सख्त कदम राजीव गांधी के विरुद्ध क्यों नहीं उठाया?**
- **राबर्ट वाड्रा तो चलो सोनिया का जमाई है। पर उसके साथ आपराधिक षड़यंत्र में आप सबका जमाई डी एल एफ भी तो शामिल है। जग जाहिर है कि डी एल एफ के रीयल एस्टेट के धंधों में कांग्रेसियों का ही नहीं भाजपाइयों का भी काला धन लगा हुआ है। ऐसे में इस दामाद के ख़िलाफ़ आपको भला कौन कार्यवाही करने देगा?**
- **ऐसे भी राबर्ट वाड्रा तो इस खेल का नया खिलाड़ी है। आपकी पार्टी के महान नेता नरेन्द्र मोदी ने तो आडाणी को वडोदरा शहर के बराबर ज़मीन और मुंबई समुद्र तट के बराबर का समुद्र तट गुजरात में महज 300 करोड़ में थमा रखा है। आडाणी तो आपकी पार्टी की आंख का तारा हुआ। क्या आप में हिम्मत है कि मोदी-आडानी आपराधिक गठबंधन के विरुद्ध कार्यवाही का जिक्र भी जुबान पर ला सकें?**